IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वृद्ध विमर्श: युवा भारत की अगली तस्वीर

श्रद्धा व्यास

शोधार्थी, हिंदी विभाग, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)

ईमेल : shraddhavyas56@gmail.com

प्रो. एजाज अहमद कादरी

प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)

ईमेल : dr-azaqadri786@gmail.com

सारांश

वृद्धावस्था से तात्पर्य अंतरराष्ट्रीय मानदंड अनुसार जीवन के 60 बसंत पार व्यक्ति से है। भारत एक युवा राष्ट्र है, जहां कुल जनसंख्या का बड़ा हिस्सा युवा है लेकिन साथ ही भारत में बुजुर्ग आबादी की वृद्धि दर सामान्य आबादी की तुलना में अधिक है निकट भविष्य में हर पांच व्यक्तियों में से एक व्यक्ति वृद्ध होगा। यह परिवर्तन जीवन के सभी स्तर (सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक) पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। वृद्ध विमर्श पर आधृत शोध युवा भारत की अगली तस्वीर भारत में वृद्धावस्था की बदलती परिभाषा, वृद्धों की स्वास्थ्य संबंधित समस्या, उनके अनुभवों एवं समाज में उनकी बदलती भूमिका को केंद्र में रखता है। यह अध्ययन इस बात को भी बताता है कि युवा राष्ट्र में वृद्धों की स्थिति क्या है एवं वृद्ध जीवन के संघर्ष की जटिलता को समाज के सामने उजागर करने का प्रयास करता है, समाज के आधार स्तंभ वृद्ध वर्ग जिनका हमारी संस्कृति के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है उनकी महता को समझता है। उक्त शोध वृद्ध जीवन के भावों व संवेगों का चित्रण करना तथा वृद्धों के जीवन में व्याप्त अकेलेपन कष्ट, उपेक्षा, कुंठा, पीड़ा संत्रास व अपमान को भी विवेचित करता है एवं दो पीढ़ीयों के मध्य आये अंतराल को कम करने का प्रयास करता है, इसके साथ ही युवा वर्ग को अपने कर्तव्य से अवगत कराने का प्रयास करता है, और वृद्धों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करता है।

इस शोध कार्य के माध्यम से यह प्रयास रहेगा कि दिशाहीन होती जा रही आज की युवा पीढ़ी अपने बड़े बुजुर्गों का सम्मान करें और उनके द्वारा दिया गया अनुभव से संचित ज्ञान प्राप्त कर जीवन को सफल व सार्थक बना सके, इसके साथ ही प्रस्तुत शोध के माध्यम से आज का लेखक युवा से वृद्ध होते भारत की भावी चुनौतियों को समझ कर अपनी लेखनी से उनमें सम्मान के रंग भरकर विश्व पटल पर नया संदेश देना चाहता है।

मुख्य शब्द : वृद्धावस्था का सत्य, युवा भारत, वृद्ध जीवन, युवा शक्ति, राष्ट्र निर्माण

प्रस्तावना:

आधुनिक युग में विमर्शों की श्रृंखला को दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, स्त्री विमर्श, किन्नर विमर्श एवं वृद्ध विमर्श के विभिन्न वैचारिक धाराओं के प्रतिबिंब के रूप में देखा जा सकता है। जहाँ उत्तर मध्यकाल में समाज का अभिजात्य वर्ग चन्द चांदी के खनकते सिक्कों की थाप पर थिरकते हुए सुरा और सुंदरी में डूबा हुआ था, वही आधुनिक काल का साहित्यकार साहित्य की विभिन्न धाराओं में डूबते–उतराते हुए भी वास्तविकता से दूर नहीं होना चाहता, यही कारण है की सत्य को अपने आगोश में समेटे आज का लेखक युवा से वृद्ध होते भारत की भावी चुनौतियों को समझकर अपनी लेखनी के द्वारा समस्त संसार को इससे अवगत कराने का सार्थक प्रयास कर रहा है। प्रतिपल परिवर्तित प्रकृति में जिस प्रकार

हमारे दिन की शुरुआत सूर्योदय की उषाकालीन लालिमा के साथ होती है और जेठ की दुपहरी के मध्याह्न में वही सूर्य अपने पूर्ण यौवन के प्रखर ताप से संपूर्ण सृष्टि को भयाक्रांत कर देता है किंतु बात यहीं समाप्त नहीं होती अपराह्न पक्ष में सूर्य ढलान की तरफ उतरते सायंकालीन बेला में अस्ताचल की ओर गमन करते बहुत शांत प्रतीत होता है, ठीक वैसे ही मानव जीवन में भी कुछ प्रमुख अवस्थाएं आती है जिन्हें शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था प्रोढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था के नाम से जाना जाता है। जहां शैशव में मनुष्य अपने प्रत्येक कार्य के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है वही मनुष्य युवावस्था की शक्ति संपन्न स्थिति में पहाड़ को निर्झर बनाने की क्षमता से युक्त होता है और समय के साथ अवस्थाओं के परिवर्तन के क्रमिक दौर में पुनः वृद्धावस्था तक आते–आते मानव फिर सहारे की तलाश खोजने लगता है। अवस्थाओं के इस दौर से कुछ नया सीखते हुए नूतन अनुभवों को आत्मसात कर मानव जीवन जीता है यह सार्वभौमिक सत्य है कि इन्हीं अनुभवों की छाया तले वृद्ध वर्ग अपने और अपने आसपास के लोगों को प्रभावित करते हैं। जीवन अनुभूत अनुभव की यह श्रृंखला बुजुर्गों की संचित संपत्ति मानी जाती है और ज्ञान और परामर्श के रूप में प्रत्येक काल में समाज की थाती के रूप में सहेज कर रखी जाती है किंतु कितने दुख की बात होगी जब अनुभवों की खान इस वृद्धावस्था को आगे बढ़ने की होड़ में नई पीढ़ी द्वारा अपमानित कर हाशिये पर धकेल दिया जाए, तो समाज पथ प्रदर्शक विहीन हो जाएगा। इसी समस्या को चिन्हित और अंगीकृत करते हुए अनेक सहृदय साहित्यकारों ने वृद्ध जीवन की समस्याओं पर उपन्यास कहानी और कविताएं रचते हुए अपनी रचनाओं में वृद्ध जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

विमर्श और वृद्धावस्था से तात्पर्यः

विमर्श के माध्यम से समाज में प्रचलित किसी भी विषय पर हम विचार विवेचना और तार्किक रूप से समीक्षा करते हैं। विमर्श से आशय यह भी हो सकता है कि जो विविध मूल्य से तथ्यों का संग्रहण करके किसी एक विषय के गुण दोष का परीक्षण करने में सहायक हो। शाब्दिक रूप से सामान्य तौर पर देखा जाए तो वृहद हिंदी कोष में विमर्श का अर्थ विचार विवेचन या परीक्षण से लिया जाता है। समीक्षा अथवा सोच विचार कर तथ्य या किसी बात का पता लगाना, गुण दोष के आधार पर आलोचना या मीमांसा करना, समाज में व्याप्त तथ्यों को परखने की क्रिया के अतिरिक्त विमर्श से तात्पर्य परामर्श या सलाह से भी लिया जा सकता है। विशिष्ट रूप से देखा जाए तो वृद्ध विमर्श से तात्पर्य 60–65 वर्ष की अवस्था के पश्चात व्यक्ति के व्यवहार, कार्य प्रणाली, रहन–सहन, मनस् चेतना का वृद्ध विमर्श के माध्यम से मूल्यांकन किया जा सकता है। वृद्ध का शाब्दिक अर्थ है बड़ा या पका हुआ या परिपक्व होना। जीवन के उत्तरार्ध का यह सोपान मानव जीवन की समय अनुसार परिवर्तित होने वाले स्वाभाविक स्थिति के रूप में वृद्धावस्था के नाम से जाना जाता है। वृद्धावस्था धीरे–धीरे क्रमशः घटित होने वाली प्राकृतिक घटना है जो अंततोगत्वा मनुष्य को कमजोर और असमर्थ बनाती प्रतीत होती है।

मानव जीवन में समय अनुसार शारीरिक परिवर्तन होते रहते हैं। मानवीय सृष्टि के सार्वभौमिक सत्य रूप में धीरे–धीरे शारीरिक परिवर्तनों के माध्यम से आने वाली यह एक क्रमिक और अपरिहार्य घटना है जो की नितांत स्वाभाविक एवं प्राकृतिक रूप से मानव शरीर में घटित होती है। निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि वृद्धावस्था परिवर्तन की वह अवस्था है जिसमें आरंभ से लेकर इस दौर तक व्यक्ति के जीवन के समस्त अनुभवों के सभी पक्ष सन्निहित होते हैं। अतः वृद्धावस्था की परिस्थितियों, घटित घटनाओं आदि का चिंतन करना और वृद्धावस्था की समस्याओं को समझ कर उनके लिए उचित समाधान करना ही वृद्ध विमर्श है। मूल्यो के बदलते दौर में आज वृद्धावस्था को नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता है जिसमें बुजुर्गों के प्रति संवेदना के साथ उनके प्रति आदर और सम्मान का भाव हो। साहित्य एक दर्पण के समान समाज में प्रचलित परंपराओं तथा समस्याओं पर विमर्श करने की तरफ ध्यान आकर्षित कर समस्या की वास्तविक छवि का अंकन करता है। संयुक्त परिवारों के टूटने के कारण जीवन की आपा–धापी में आज हम इतने व्यस्त हो गए हैं कि हमारे पास बुजुर्गों को समझने का समय ही नहीं है।

युवा भारत में वृद्धों की स्थितिः

29 सितंबर 2023 में ''द हिंदू'' में प्रकाशित संपादकीय के आधार पर यदि हम विचार करें तो बुजुर्ग आबादी की वृद्धि दर सामान्य आबादी की तुलना में अधिक है। क्योंकि विज्ञान की उन्नति का सर्वाधिक लाभ हमें आज के दौर में स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुआ है। इससे विश्व में मानव जीवन की प्रत्याशा बढ़ रही है, जिससे भारत भी अछूता नहीं है। संयुक्त राष्ट्र की जनसंख्या कोष से जुड़ी इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023 के अनुसार भारत में अगले चार दशक में 60 वर्ष और उससे अधिक

आयु की जनसंख्या में नाटकीय रूप में वृद्धि होने का अनुमान है। जहां वृद्ध जनसंख्या का आंकड़ा 2010 में 8%, 2021 में 10.1% था वही 2036 में 15% से बढ़कर 2050 में 20.8% अर्थात् 34.7 करोड़ होने की संभावना है। इस आधार पर कहा जा सकता है की निकट भविष्य में हर पांच व्यक्तियों में से एक व्यक्ति वृद्ध होगा। इससे भी आगे बढ़कर विश्लेषण किया जाए तो पुरुषों की बनिस्पत महिलाओं की संख्या अधिक और राज्यों के स्तर पर देखें तो उत्तर की अपेक्षा दक्षिणी राज्यों में वृद्ध नागरिकों का प्रतिशत अधिक है। प्रश्न यह उठता है कि देश के बुजुर्गों का 2/5 वा हिस्सा गरीबी में जी रहा है जिनमें पंजाब के 5% तो छत्तीसगढ़ के 47% बुजुर्ग है। इनमें से 18.7% के पास आय का कोई स्रोत नहीं है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए राष्ट्रीय नीति 1999 एवं माता–पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरण पोषण के लिए नागरिक अधिनियम 2007 लाया गया जो उनकी देखभाल की गारंटी देता है।

विचारणीय तथ्य यह है कि भारत अभी एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है जहां पर वृद्ध आबादी बड़ी संख्या में नए संस्थान सेवा हेतु और बुजुर्गों की बदलती जरूरत और देखभाल के लिए समर्पित सहायता के व्यापक ढांचे की मांग करती है। सर्वविदित कि 1990 से अब तक भारतीय अर्थव्यवस्था 10 गुना तक बढ़ गई है और विकास की इसी रफ्तार से 2027 तक इसके दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की उम्मीद है परंतु हमें भौतिकता की, चकाचौंध में सदैव इस सत्य को याद रखना चाहिए कि इस अतिरिक्त संपत्ति का बहुत बड़ा भाग उन लोगों की देन है जो अभी भी जी जान से कार्य कर रहे हैं और 2050 तक यह वरिष्ठ नागरिकों की श्रेणी में गिने जाएंगे। आवश्यकता इस बात की है कि भारत के इन रजत नागरिकों ने अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए बहुत योगदान दिया है अतः अपनी सांस्कृतिक विरासत के अनुरूप इन नागरिकों के स्वर्णिम वर्षों में सम्मान एवं कल्याण हेतु सार्वजनिक और निजी नीतियों द्वारा सुखद और सहायक वातावरण तैयार किया जाना चाहिए।

वैश्वीकरण के दौर में भारत में वृद्ध होती आबादी की समस्याएं:

वर्तमान में भारतीय समाज के विकास की कल्पना का आधार औद्योगीकरण, नगरीकरण, व्यवसायीकरण, आधुनिक शिक्षा एवं मुख्यत वैश्वीकरण को माना जा रहा है। व्यक्ति सुख की प्रधानता के कारण परंपरागत भारतीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है तथा व्यक्तिवादिता की अहमन्यता के कारण आत्मीयता में भी कमी आई है। यही कारण है कि स्व की महता के कारण भारतीय समाज में परंपरागत एवं आधुनिक मूल्यों में द्वन्द्व स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। एक वर्ग भारतीय समाज का भौतिकता की और उन्मुख है तो दूसरा वर्ग निर्धारित मूल्य आधारित मानदंडों के साथ सांस्कृतिक स्वरूप को कुछ परिवर्तन के साथ बनाए रखना चाहता है। अतः संपूर्ण समाज परिवर्तन की ओर अग्रसर है। लेकिन बदलते सामाजिक परिवेश में वृद्ध जनों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए हम समस्या का वर्गीकरण इस प्रकार कर सकते है

वृद्धावस्था जन्य समस्याएं:

1. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं
2. पारिवारिक व सामाजिक समस्याएं
3. आर्थिक समस्याएं
4. व्यक्तिगत समस्याएं

1. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं :

आयु के इस पड़ाव पर व्यक्ति को कई प्रकार की बीमारियां एवं रोग घेर लेते हैं। प्रायः देखने में आता है कि व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ है भोजन भी करता है, पाचन शक्ति भी सही है पर मानसिक तौर पर अपना नाम तक भूल जाता है एवं कई बार इसके विपरीत बचपन से लेकर वृद्धावस्था की समस्त घटनाएं उसको याद है परंतु शारीरिक रूप से अनेक रोगों से घिरा हुआ है। अतः स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को दो भागों में बान्टा जा सकता है

(क) मानसिक स्वास्थ्य

ख) शारीरिक स्वास्थ्य

(क) मानसिक समस्याए :

आयु के इस दौर में शरीर के साथ–साथ मन से भी व्यक्ति जीवन के अनेक झन्झावातो से गुजरते हुए कमजोर हो जाता है जिसका प्रभाव शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। ऐसे में मानसिक क्षमता कम होने पर उसकी याददाश्त कमजोर हो जाती है और व्यक्ति प्रायः मन से भी दुर्बल हो जाता है।

(ख) शारीरिक समस्याएं :

युवावस्था में असीम बलशाली व्यक्ति की भी वृद्धावस्था में शारीरिक क्षमताएं क्षीण होने लगती है और वह इतना दुर्बल हो जाता है कि बिना किसी की सहायता से कार्य नहीं कर सकता। जो व्यक्ति कभी दूसरों का सहारा होता था, आज स्वयं सहारे के लिए मोहताज हो जाता है।

2. पारिवारिक व सामाजिक समस्याएं:

इस उम्र में अधिकांश वृद्धों का जीवन उपेक्षित हो जाता है। परिवार के लोग उनसे कतराने लगते हैं, सभी उनसे दूर–दूर रहने लगते हैं उन्हें अकेला छोड़ दिया जाता है। शारीरिक अक्षमता के कारण स्वयं बाहर जा नहीं सकते उनका सामाजिक दायरा भी सीमित हो जाता है।

3. आर्थिक समस्याएं :

अवस्था के इस पड़ाव पर व्यक्ति अपने सामाजिक एवं व्यक्तिगत दायित्वों को पूरा करते–करते स्वयं के लिए अधिक धन संचय नहीं कर पाता एवं जीवन पर्यंत सहेजे गए रिश्तो के मोहपाश में बंधा होने से स्वयं के प्रति लापरवाह या असावधान हो जाता है। यही कारण है कि कई बार सभी के प्रति दायित्त्व पूर्ण करने वाला व्यक्ति आर्थिक रूप से स्वयं रीते हाथ रह जाता है और दूसरों पर निर्भर रहने लगता है।

4. व्यक्तिगत समस्याएं:

भौतिकता की चकाचौंध में अंतहीन महत्वाकांक्षाओं को साधने के प्रयास में आज अनेक वृद्ध लोगों ने अपने बच्चों को स्वयं से दूर शहर, राज्य अथवा विदेश में पढ़ाई या नौकरी के लिए भेजा था, वह बच्चे बदलते परिप्रेक्ष में वहीं के होकर रह गए। फलस्वरुप वृद्ध व्यक्ति पूरी तरह से अकेलेपन का शिकार हो गया। ऐसी स्थिति में नौकर के अलावा उनके पास कोई अपना नहीं है जिनके साथ में वे अपने मन की बात साझा कर सके।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त शोध पर यदि विहंगम दृष्टिपात किया जाए तो निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बदलते परिवेश में दो पीढ़ियों के मध्य मत भिन्नता एवं टकराव की स्थिति दृष्टिगोचर होती है उसका कारण वर्तमान सामाजिक ताना बाना है जिसके मूल में व्यक्ति सुख की प्रधानता है। भारतीय समाज की बनावट का मूल आधार परिवार नामक संस्था थी। इस संस्था का वृहत् रूप संयुक्त परिवार के रूप में समाज की रीढ़ था किन्तु वर्तमान में विघटित हो रही इस संस्था के कारण एवं एकल परिवारों के प्रचलन भी समस्या का कारण बन रहे है। मूल्यों के बदलते स्वरूप के मद्देनजर वर्तमान भारतीय सामाजिक मूल्यों और आदर्शों में तथा पुरातन में व्याप्त रहे सामाजिक मूल्यों और आदर्शों में पर्याप्त भिन्नताएं है यही कारण है कि समष्टि के स्थान पर व्यष्टि सुख की प्रधानता हो गयी। वैश्वीकरण की बढती होड़ में पश्चिम का अन्धानुकरण भी भारतीय परिवारवाद की चरमराहट का हिस्सा है। नगरीकरण और औद्योगीकरण की प्रकिया से जहाँ व्यक्ति में भौतिकवादी प्रकृति बलवती हुई है वहीं आध्यात्मिक एवं आदर्शात्मक मूल्यों का ह्रास भी परम्परागत जीवन शैली और आदर्शों में परिवर्तन कर पीढ़ियों के संघर्ष को बढ़ाने का आधार बना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. नीलम वाधवानी, वृद्ध विमर्श की अवधारणा
2. जयसिंह यादव, भारत में वृद्धों की सामाजिक समस्याओं एवं निदान (रिसर्च पेपर)
3. http//www-drishtiias-com– भारत में बुजुर्गों की स्थिति
4. www-dw-com/hi/ बुजुर्गों के साथ बढ़ता भेदभाव
5. हरदेव बाहरी, अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश, राजपाल प्रकाशन दिल्ली

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation